प्रगति ग्रामीण विकास संस्था

बैतूल

वार्षिक रिपोर्ट

1 अप्रैल, 2022 से 31 मार्च, 2023

प्रगति ग्रामीण विकास संस्था बैतूल द्वारा वर्ष 2022–2023 में संस्था के कार्यक्षेत्र भीमपुर विकासखण्ड के 5 गाँव भाण्डवा टेकडीढाना पीपलढाना मानकदण्ड ,पातरी में पिछड़े हुए निर्धन बेसहारा ,गरीब लोगों के बीच जागरूकता एवं बेहतर समन्वय को स्थापित करने के उद्दे य से किया गया जिसमें मुख्य रूप से प्राकृतिक खेती स्वास्थ्य ि ाक्षा का महत्व व उसकी अनिवार्यता,ि ाक्षा में सुधार, बेहत्तर पारस्परिक समन्वय,सामुदायिक एकता,छुआछूत व भेदभाव की समाप्ति करना,स्वच्छता संबंधी,जलसंरक्षण संबंधी वृक्षारोपण,पर्यावरण संरक्षण, पंचायती राज व्यवस्था में समुदाय की सक्रिय भागीदारी, बच्चों के अधिकार, समुदाय के लोगों के आर्थिक, सामाजिक बदलाव के लिये ग्राम स्तरीय समन्वय बैठकें,महिला हिंसा का विरोध ,एवं ग्राम के समुदाय को अपने विकास के लिये समूहो के रूप में तैयार कर अपने गॉव के विकास के लिये प्रोत्साहति करने का प्रयास किया गया जिससे इन समुदाय के दबे–कुचले व सामाजिक ,आर्थिक तथा नैतिक रूप से पिछड़े इन लागों को समाज के विकास की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास किया गया जिसके अंर्तगत संस्था के क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं द्वारा अपने कार्य क्षेत्र में सतत् रूप से ग्राम समुदाय से निरंतर समन्वय बैठकें, प्र ि ाक्षण, अभियान जैसी गतिविधियों को आयोजित किया गया ।

यह क्षेत्र पहाड़ी, पथरीला और बंजर है इस कारण से यहां के निवासी केवल बरसात के दिनो में होने वाली फसल का उत्पादन ही ले पाते है और बाकी समय में काम करने के लिये ये परिवारो के सदस्यों को बाहर काम करने जाना पढ़ता है।

स्वास्थ्य स्वच्छता कार्यक्रम :– ग्राम भाण्डवा ,टेकडीढाना, पीपलढाना , खामढाना एवं मानकदण्ड, में स्वास्थ्य स्वच्छता क संबंध में जानकारी दी गई जो निम्नानुसार है । स्वच्छता व स्वास्थ्य कार्यक्रम के माध्यम से 05 गॉव के प्रतिनिधियो को बैठको प्र ि ाक्षणो के माध्यम से स्वयं की स्वच्छता व स्वास्थ्य संबंधी आदतों को एवं उसके स्तर में सुधार लाते हुये सम्पूर्ण ग्राम परिवे ा की स्वच्छता को बेहतर करने के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया गया जिससे गंदगी व बीमारी के दुष्चक्र में न फॅस सके । जिसमें कि ोरियों एवं महिलाओ को एनीमिया की रोकथाम हेतु जीवनचक्र आधारित रणनीति पर जानकारी प्रदान की गई । एनीमिया एक गभ्भीर स्वास्थ्य समस्या है जो व्यक्ति की भाारीरिक मानसिक क्षमता को विपरीत रूप से प्रभावित करती है । इसमें हमारे खून में हीमोगलेबिन की कमी हो जाती है । हीमोग्लोबिन लाल रक्त कोि ि ाकाओं में पाया जाने वाला तत्व है जो ऑक्सीजन को भारीर के विभिन्न भागों तक पहुॅचाता है। एनीमिया के कई कारण है इनमें से प्रमुख रूप से आयरन की कमी । एनीमिया के संकेत नाखून ,जीभ,हथेली और ऑखों में लालिमा की कमी से ज्ञात

सरलता हो जाता है । आयरन युक्त आहार सुंतुलित आहार ,प्रोटीन ताथ विटामिन हो एनीमिया की रोकथाम में मदद करता है । हरी पत्तेदार सब्जियॉ जैसे कि पालक मैथी सरसों सहजन की फली पुदीना ठत्यादि तथा इन्हे लोहे की कढ़ाई में पकाना । फलियॉ और दाले कि सफेद चना ,काला चना ,लाल मसूर ,सोयाबीन अंकुरित दाले अंडा मॉस औी मछली अनाज गेहूॅ ,ज्वार बाजरा मुंगफली तिल गुड़ मेवे आंवला नीबू, संतरा जिसमें विटामिन सी की मात्रा अधिक होती है वे आयरन को बढ़ाते है ।

1. 6 माह से 5 वर्श के बच्चो को 1 एम. एल. आई. एफ. ए. सिरप सप्ताह में 2 बार मंगलवार एवं भुक्रवार 20 एम दृजी. एलीमंटल आयरन एवं 100 माइक्रोग्राम फोलिक एसिड आ ाा के द्वारा प्रत्येक मंगलवार एवं भुक्रवार को ऑगनवाडी के सहयोग सं प्रदायगी होगी ।
2. 5 से 10 वर्श के बच्चो को प्रति सप्ताह 1 आई. एफ. ए. गुलाबी गोली 45 मि.ग्राम एलिमेंटल आयरन एंव 400 माइक्रोग्राम फोलिक एसिड प्रत्येक मंगलवार स्कूल में ि ाक्षको के माध्यम से प्रदायगी होगी ।
3. 10 से 19 वर्श के कि ाोर बालक एवं बालिका प्रति सप्ताह 1 आई. एफ. ए. नीली गोली 100 मि. ग्राम एलिमेंटल आयरन एंव 500 माइक्रोग्राम फोलिक एसिड प्रत्येक मंगलवार स्कूल में ि ाक्षको के माध्यम से प्रदायगी होगी ।
4. गर्भवती महिलायें दुसरी तिमाही से प्रति दिन 1 आई. एफ. ए. लाल गोली 100 मि.ग्राम एलिमेंटल आयरन एंव 500 माइक्रोग्राम फोलिक एसिड गर्भावस्था के अंत तक ए. एन.एम. द्वारा ग्राम स्वास्थ्य एवं पोशण दिवस ए. एन. सी. जॉच के प चात् प्रदायगी होगी । ऑगनवाडी केन्द पर ग्राम स्वास्थ्य पोशण दिवस /गृह ।प्रत्येक मंगलवार स्कूल में ि ाक्षको के माध्यम से प्रदायगी होगी ।
5. छात्री महिलायें प्रतिदन आई. एफ. ए. लाल गोली 100 मि.ग्राम एलिमेंटल आयरन एंव 500 माइक्रोग्राम फोलिक एसिड 6 माह तक ए. एन.एम. / आ ाा द्वारा ऑगनवाडी केन्द पर ग्राम स्वास्थ्य पोशण दिवस /गृह भेट के दौरान प्रदायगी होगी ।
6. 19 से 49 वर्श की प्रजनन ाील आयु वर्ग की महिलायें प्रति सप्ताह आई. एफ. ए. लाल गोली 100 मि.ग्राम एलिमेंटल आयरन एंव 500 माइक्रोग्राम फोलिक एसिड प्रत्येक मंगलवार गृह भेंट क दौरान आ ाा द्वारा प्रदायगी होगी ।

उपलब्धियॉ :–

1. बीमारियों में कमी आयी ।
2. स्वच्छता व स्वास्थ्य के प्रति ग्रामवासी ध्यान देने लगे ।
3. स्कूली बच्चो के रहन–सहन व सफाई के स्तर में सुधार हुआ है ।
4. गॉव के हैण्डपम्प व कुओं के आस–पास ग्रामवासी सफाई समय –समय पर करते है।

1. **प्राकृतिक खेती कार्यक्रम :** प्राकृतिक खेती रसायनमुक्त खेती होगी जिसमे प्राकृतिक आदानों का उपयोग रहेगा । कृषि आधारित ,यह एक विविध कृषि प्रणाली है जो फसलो ,पेड़ो और प ाुधन को एकीकृत करती है। प्राकृतिक खेती कई अन्य लाभ जैसे मिट्टी की उर्वरता पर्यावरणीय स्वास्थ्य की बहाली होगी । रासायनिक खेती व प्राकृतिक खेती के लाभ हानि को सरलता से किसानो

को समझया गया जिसमें प्रत्येक ग्राम सतर पर प्र ाक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये । ऊॅची गुणवता वाली ,ज्यादा उपज की भून्य लागत वाली ,जहर मुक्त ,कर्ज मुक्त चिंता मुक्त कश्ट मुक्त भाोशण मुक्त ,रोग मुक्त प्राकृतिक संकट मुक्त ऐसी खेती जो किसानों को सही अर्थ में सुखी –समृद्व – स्वावलम्बी करने वाली एवं प्रकृति ,ज्ञान –विज्ञान ,अंहिसा और आध्यात्मिक आधारित कृशि पद्वति है । जीवामृत ,घनजीवामृत दे ाी खाद् ,बीजामृत कीट ना ाक में नीमास्त्र, ब्रम्हास्त ,अग्नि अस्त्र , फफुंदना ाक ,द ापर्णी एंव विटामिन से संबंधित जानकारी प्रदान की गई ।

- यह प्रकृति, विज्ञान, आध्यात्म एवं अहिंसा आधारित भाा वत कृशि पद्धति है।
- इस पद्धति में आपको रासायनिक खाद, गोबर खाद, जैविक खाद, केंचुआ खाद एवं जहरीले रासायनिक–जैविक कीटना ाक ऐसे कौनसे भी उर्वरक खरीदना नही। केवल एक दे ाी गाय से 30 एकड़ खेती कर सकते हो– चाहे वो सिंचित हो या असिंचित।
- इस कृशि पद्धति अनुसार आपको केवल 10 प्रति ात पानी एवं 10 प्रति ात बिजली की आव यकता है, इसका मतलब 90 प्रति ात पानी एवं बिजली की बचत।

- इस प्राकृतिक खेती में उत्पादन रासायनिक एवं जैविक खेती से बिल्कुल कम नही मिलेगा, बल्कि ज्यादा ही मिलेगा।
- उत्पादित माल पूर्णतः जहर मुक्त, पोशक, उच्च गुणवत्ता और स्वादिश्ट होने से उपभोक्ताओं की ज्यादा मांग से दाम भी अच्छा मिलता है।
- ऐसी खेती करने वाले एक भी किसान ने आत्महत्या नही की क्योंकि उसका लागत मूल्य भून्य है।

- रासायनिक एवं जैविक खेती से मानव, प ाु, पंछी, पानी, पर्यावरण का विना ा होता है। परंतु ज़ीरो बज़ट प्राकृतिक खेती से इन सबका विना ा रूकता है और प्राकृतिक संसाधनों की भाा वतता बढ़ती है।
- भून्य लागत खर्च, ज्यादा ऊपज, उत्तम गुणवत्ता, अच्छी मांग, योग्य मूल्य ऐसे खेती से गॉव से भाहर होने वाला मानवी स्थलांतर रूक सकता है।
- इन सभी मुद्दों पर विचार करते हुए दे ा के हर किसान ने ज़ीरो बज़ट प्राकृतिक खेती एवं आध्यात्मिक खेती का स्वीकार करना चाहिए।

❖ **पंचायती राज व्यवस्था :–** पंचायती राज व्यवस्था के अन्तर्गत भीमपुर विकासखण्ड की तीन पंचायतों के प्रतिनिधियों, सरपंच, पंच, उपसरपंच, पंचायत सचिव, कोषाध्यक्ष, महिला प्रतिनिधियों को पंचायती राज

व्यवस्था, ग्राम स्वराज व्यवस्था, ि ाक्षा, स्वास्थ्य, समग्र स्वच्छता कार्यक्रम, प्राकृतिक खेती, सरकार के नीति नियमों तथा सरकार की ग्राम स्वराज रूपी सरल भाासन प्रणाली को सरल रूप से बताते हुए जन समुदाय व प्रतिनिधियों में उत्तरदायित्व को लेकर उनमें जागरूकता पैदा करना जिससे ज्ञान व समझ के आधार पर उत्साह एवं प्रेरणा स्वरूप वे स्वयं निर्णय लेने की क्षमता को विकसित कर सके। जिससे उनमें स्वयं के सहयोग एवं सामुदायिक सोच को विकसित किया जा सके।

ग्राम पंचायतों की योजनाओं के माध्यम से प्राकृतिक खेती को बेहतर किया जा सकता है।

1. पंचायतों एवं ग्राम सभा के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों एवं प्राकृतिक खेती हेतु वातारण का निर्माण करना।
2. छोटे और सीमांत कृशकों के लिये कृशि विभाग, सिंचाई विभाग और मनरेगा के सहयोग से योजना बनाकर लाभ ले सकते हैं।
3. मनरेगा के अन्तर्गत खेतों में तालाबों का निर्माण, कुंओं का निर्माण, मेंढ़बंदी, मिट्टी के कटाव को रोकना आदि कार्य किये जा सकते हैं।

उपलब्धियॉ :–

1. पंचायतों की बैठके नियमित होने लगी, बैठको में उपस्थिति बढ़ी ।
2. सरपंचों की सचिव व भाासकीय कर्मचारियों पर से निर्भरता में कमी आयी ।
3. सरकार की लाभकारी योजनाओं से ग्रामवासी लाभअर्जन लेने लगे है ।
4. जल, जंगल, जमीन का महत्व समझते हुए ग्रामवासी कृषि भूमि को सुधारने, पानी रोकने व वृक्षारोपण करने कार्य करने लगे हैं ।

सचिव